

९. ब्रजवासी

- भक्त सूरदास

परिचय

जन्म : १४७८, आगरा (उ.प्र.)

मृत्यु : १५८०

परिचय : भक्त सूरदास वात्सल्य रस के मर्मज्ञ कवि माने जाते हैं। आपने शृंगार और शांत रसों का भी बड़ा मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। आप हिंदी भाषा के सूर्य कहे जाते हैं। आपका काव्य सृजन ब्रज भाषा में हुआ है। आपके पदों में गेयता है। आपके 'भ्रमरगीत' में सगुण और निर्गुण का उत्तम विवेचन हुआ है। उसमें वियोग एवं प्रकृति सौंदर्य का सूक्ष्म और सजीव वर्णन किया गया है।

प्रमुख कृतियाँ : 'सूरसागर', 'सूर सारावली', 'साहित्य लहरी', 'नल दमयंती' आदि।

पद्य संबंधी

भक्त सूरदास ने इन पदों में उस समय का वर्णन किया है जब श्रीकृष्ण गोकुल से मथुरा चले गए हैं। गोकुलवासी कृष्ण वियोग से व्यथित हैं। प्रथम तीन पदों में आपने माता यशोदा एवं गोपियों के श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम एवं उनकी अनुपस्थिति में उनके दुख को दर्शाया है।



जसोदा बार-बार यौं भाषै ।
हे कोऊ ब्रज हितू हमारौ चलत गुपालहिं राखै ॥
कहा काज मेरे छगन-मगन कौं, नृप मधुपुरी बुलायौ ।
सुफलक सुत मेरे प्रान हरन कौं काल रूप है आयौ ।
बरु यह गोधन हरौ कंस सब मोहिं बंदि लै मेलौ ।
इतनोई सुख कमल-नयन मेरी अँखियान आगे खेलौ ॥
बासर बदन बिलोकत जीवों, निसि निज अंकम लाऊँ ।
तिहिं बिछुरत जो जियौं कर्मबस तौ हँसि काहि बुलाऊँ ॥
कमलनयन गुन टेरत टेरत, दुखित नंद जु की रानी ॥

× ×

× ×

प्रीति करि काहू सुख न लह्यौ ।
प्रीति पतंग करी पावक सौं, आपै प्रान दह्यौ ॥
अलिसुत प्रीति करी जलसुत सौं, संपुट मांझ गह्यौ ।
सारंग प्रीति करी जु नाद सौं, सन्मुख बान सह्यौ ॥
हम जो प्रीति करी माधव सौं, चलत न कछू कह्यौ ।
सूरदास प्रभु बिनु दुख पावत, नैननि नीर बह्यौ ॥

× ×

× ×

अति मलीन वृषभानु कुमारी ।
हरि श्रम जल भीज्यौ उर अंचल, तिहि लालच न धुवावति सारी ॥
अध मुख रहति, अनत नहिं चितवति, ज्यौ गथ हारे थकित जुवारी ।
छूटे चिकुर बदन कुम्हिलाने, ज्यौं नलिनी हिमकर की मारी ॥

× ×

× ×

कहाँ लौं कहिए ब्रज की वात ।
सुनह स्याम तुम विन उन लोगनि जैसे दिवस विहात ॥
गोपी, ग्वाल, गाइ गोसुत सब, मलिन वदन कृस गात ।
परम दीन जनु सिसिर हेम हत, अंबुजगन विनु पात ॥
जो कोउ आवत देखि दूर तें उहि पूछत कुसलात ।
चलन न देत प्रेम आतुर उर कर चरननि लपटात ॥
पिक चातक वन वसत न पावत वायस वलि नहिं खात ।
सूर स्याम संदेसन के डर पथिक न उहिं मग जात ॥

× ×

× ×

ऊधौ मोहिं ब्रज विसरत नार्हीं ।
 वृंदावन गोकुल वन उपवन, सघन कुंज की छाहीं ॥
 प्रात समय माता जसुमति अरु नंद देखि सुख पावत ।
 माखन-रोटी दह्यौ सजायौ, अति हित साथ खवावत ॥
 गोपी, ग्वाल, वाल संग खेलत, सब दिन हँसत सिरात ।
 सूरदास धनि-धनि ब्रजवासी, जिनसौं हितु जदु-तात ॥

(‘सूरसागर’ से)

चौथे पद में उद्धव गोकुल से लौटकर मथुरा में श्रीकृष्ण को गोकुल निवासियों, पशु-पक्षी, प्रकृति का उनके प्रति प्रेम, विरह, कष्ट सुनाते हैं । अंतिम पद में श्रीकृष्ण के ब्रजभूमि एवं वहाँ के निवासियों के लगाव का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया गया है ।

शब्द संसार

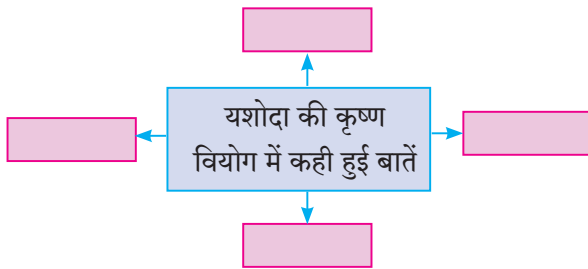
हितु पुं.सं.(हिं.) = हितैषी, स्नेही
 मधुपुरी स्त्री.सं.(सं.) = मथुरा
 बरु अ.(हिं.ब्रज.) = बल्कि
 बासर पुं.सं.(हिं.ब्रज.) = दिन
 पावक पुं.सं.(सं.) = अग्नि

संपुट पुं.सं.(सं.) = कमल की पंखुडियों का घेरा
 अनल पुं.सं.(सं.) = अग्नि
 चिकुर पुं.सं.(हिं.ब्रज.) = केश
 विहात क्रि.(हिं.ब्रज.) = बीतना

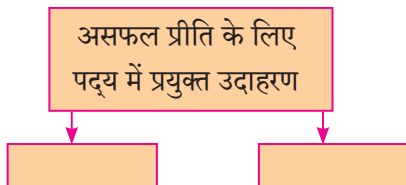
स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

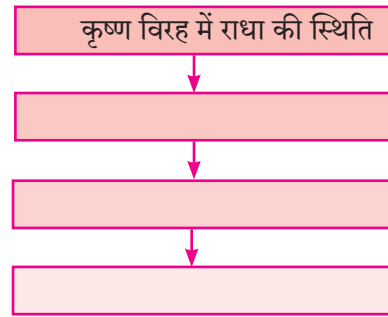


(२) कृति कीजिए :

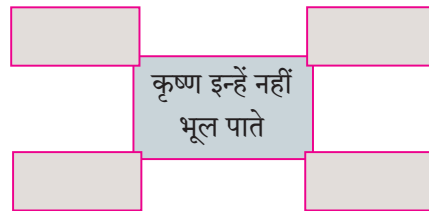


(५) दूसरे पद का सरल अर्थ लिखिए ।

(३) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :



(४) संजाल पूर्ण कीजिए :



‘मैं प्रकृति बोल रही हूँ’ विषय पर निबंध लेखन कीजिए ।

